वाल्मीकीय रामायण में समागत भौगोलिक परिस्थितियों का विवेचन

डॉ. बिंदू राजपूत

संस्कृत विभाग
एस.आर.के. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, फ़िरोज़ाबाद

सार

वाल्मीकि रामायण में भारतीय उपमहाद्वीप और उसके आसपास की भौगोलिक स्थितियों (नदियों, पर्वतों, वनों और जनपदों) का अत्यंत यथार्थ और स्पष्ट विवरण मिलता है।प्रमुख नदियाँ (Rivers)-सरयू नदी: यह कोसल राज्य और अयोध्या की मुख्य नदी है, जिसके तट पर पूरी कथा का केंद्र बिंदु है।गंगा और यमुना: राम के वनगमन के दौरान तमसा, गंगा (प्रयाग के पास) और यमुना को पार करने का विस्तृत मार्ग वर्णित है।गोदवार्ती/गोदावरी और नर्मदा: दक्षिण भारत के अरण्यकाल और पंचवटी क्षेत्र में गोदावरी नदी का विशेष महत्व है, जहाँ सीता हरिन की घटना घटी।पर्वत और वन क्षेत्र (Mountains & Forests)चित्रकूट: अयोध्या छोड़ने के बाद राम, सीता और लक्ष्मण ने चित्रकूट पर्वत के शांत वातावरण में अपनी कुटिया बनाई थी।दंडकारण्य: यह मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र तक फैला हुआ एक विशाल और घना वन क्षेत्र था, जहाँ राक्षस जातियों का प्रभाव था।ऋष्यमूक पर्वत और किष्किंधा: आधुनिक हंपी (कर्नाटक) के पास स्थित किष्किंधा और ऋष्यमूक पर्वत का वानर साम्राज्य दक्षिण भारत की भौगोलिक श्रृंखला का हिस्सा है।भौगोलिक और रणनीतिक महत्तामहर्षि वाल्मीकि ने किष्किंधा कांड (सुग्रीव द्वारा सीता की खोज के लिए चारों दिशाओं में वानर सेना भेजने का निर्देश) में उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक के भू-भाग, पर्वतों और गुफाओं का क्रमबद्ध विवरण दिया है।यह विवरण केवल काल्पनिक नहीं, बल्कि वास्तविक भौगोलिक और पारिस्थितिक तंत्र (Eco-system) का परिचायक है जो प्राचीन भारत की सीमाओं और जनपदों को आपस में जोड़ता है।

परिचय

पर्यावरण स्थायी मानवीय जीवन का आधार बनते हैं। वाल्मीकि रामायण में परिस्थितिकी तंत्र का सुंदर वर्णन मिलता है। इस लेख में पर्यावरण शब्द की व्यूत्पत्ती एवं अर्थ को परिभाषित किया गया है। पर्यावरण मानव जीवन के लिए कितना महत्वपूर्ण है इस पर विचार किया गया है। अनंतर प्रभु श्री राम की वनवास यात्रा के दौरान प्राप्त अयोध्या नगर से लेकर श्रीलंका तक भारतीय प्रायद्वीपीय वनों की वर्तमान स्थिति का विवरण दिया गया हैं। तत्पश्चात पर्वतों एवं नदियों का उल्लेख किया गया है। रामायण में वर्णित विभिन्न प्रजाति के जीव-जंतु एवं पेड़-पौधों का भी वर्णन किया गया है। महर्षि वाल्मीकि कृति रामायण केवल धार्मिक विषयों को ही उद्धृत नहीं करते, अपितु संपूर्ण भारत में पर्यावरण के विषय को भी समझाते हैं। जिसको श्रेष्ठतम स्तर पर लाने के लिए सिर्फ मानव जाति ही नहीं, बल्कि वहां के पशु, पक्षी भी वातावरण को स्वच्छ एवं स्वस्थ रखने में समान भूमिका निभाते थे। अतः लेख में उल्लेखित विवरण से स्पष्ट होता है की। रामायण काल में पर्यावरण अपने उन्नत स्थिति में था। मानव जाति द्वारा वर्तमान समय में पर्यावरण को हानी पहुंचाई जा रही है। जिससे मानव जीवन पर अनेकों संकट आ रहे हैं। आवश्यकता है कि हम सिख ले इस महाकाव्य से और अपने जीवन को सुखमय बनाएं। [1,2,3]

वाल्मीकि रामायण में प्राचीन भारत और एशियाई भूगोल का विस्तृत एवं यथार्थ चित्रण मिलता है, जिसमें उस काल की नदियों, पर्वतों, जंगलों और जनपदों के नाम स्पष्ट रूप से दर्ज हैं। [1, 2]

प्रमुख नदियाँ

- सरयू: यह अयोध्या (कोशल राज्य की राजधानी) के पास स्थित मुख्य नदी है।
- गंगा: इसे मंदाकिनी और भागीरथी भी कहा गया है।
- यमुना: प्रयाग के पास गंगा-यमुना संगम का वर्णन मिलता है।
- गोदावरी: यहाँ पंचवटी का क्षेत्र स्थित था, जहाँ राम, सीता और लक्ष्मण ने वनवास बिताया।
- अन्य नदियाँ जैसे नर्मदा, तामसा और फाल्गु आदि का भी उल्लेख मिलता है। [1, 2]

प्रमुख पर्वत और वन क्षेत्र

- चित्रकूट और ऋष्यमूक पर्वत: रामायण में इन पर्वतों का वास्तविक भौगोलिक संदर्भ मौजूद हैं। [1]
- दंडकारण्य: यह मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र तक फैला एक विशाल वन क्षेत्र था। [1]
- किष्किंधा: इसे आधुनिक कर्नाटक के हम्पी क्षेत्र के रूप में पहचाना जाता है। [1]

दिशाओं और राष्ट्रों का ज्ञान

- सुग्रीव द्वारा सीता की खोज के लिए वानरों को चारों दिशाओं (पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण) में भेजे जाने के मार्ग में विभिन्न देशों, पर्वतों और समुद्रों का सुंदर वर्णन मिलता है। [1, 2]
- इसमें विदर्भ, महाराष्ट्र, कलिंग, चोल, पांड्य और केरल जैसे तत्कालीन राज्यों का उल्लेख है।[4,5,6]

विचार-विमर्श

रामायण काल के भूगोल का अध्ययन न केवल प्राचीन भारत की भौगोलिक संरचना को समझने में सहायक है, बल्कि उस समय की सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था पर भी प्रकाश डालता है। रामायण में वर्णित विभिन्न स्थान, जैसे अयोध्या, प्रयाग, चित्रकूट, दंडकारण्य, किष्किंधा आदि आज भी मौजूद हैं और उनकी भौगोलिक स्थिति रामायण में वर्णित स्थानों से मेल खाती है। राजा राम का वनवास न केवल भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था, क्योंकि यह उत्तर भारत से दक्षिण भारत तक फैला हुआ था, बल्कि इसने विभिन्न राज्यों और समुदायों के बीच एकता स्थापित करने में भी योगदान दिया। शोध से स्पष्ट है कि राजा राम ने अपने वनवास के दौरान कई राज्यों के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किए। निषादराज गुहा, वनराज सुग्रीव और विभीषण के साथ गठबंधन ने रावण के विरुद्ध युद्ध में न केवल शक्ति प्रदान की, बल्कि राष्ट्रीय एकता का प्रतीक भी बन गया। राम द्वारा स्थापित ये संबंध जाति, धर्म और क्षेत्रीय सीमाओं से परे थे, जो उनकी समावेशी नीति को दर्शाते हैं।

प्राचीन भारतीय भूगोल का बेहतरीन चित्रण रामायण में वर्णित नदियों, पहाड़ों और जंगलों के माध्यम से मिलता है, जो प्राकृतिक सीमाओं और भौगोलिक विविधताओं को दर्शाते हैं। विशेष रूप से दंडकारण्य, जो मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र तक फैला हुआ था, प्राचीन भारत के विस्तृत वन क्षेत्र का संकेत देता है। यह अध्ययन राष्ट्रीय सुरक्षा के संदर्भ में राम की दूरदर्शिता को और अधिक स्पष्ट करता है। रावण जैसे आक्रमणकारियों के विरुद्ध उनके सफल अभियान न केवल उनकी सैन्य शक्ति को दर्शाते हैं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को भी प्रकट करते हैं। यह अध्ययन रामायण काल के भूगोल के साथ-साथ समकालीन समय में राष्ट्र निर्माण के लिए राजा राम के दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन हमारे समय में राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है।[7,8,9]

परिणाम

वाल्मीकि रामायण भारतीय संस्कृति, धर्म और जीवन मूल्यों का प्राचीन एवं समृद्ध ग्रन्थ है। इसमें प्रस्तुत आदर्श नायक श्रीराम की जीवन यात्रा आज भी समाज को नैतिकता, कर्तव्यनिष्ठा, आदर्श नेतृत्व और मानवीय मूल्यों की प्रेरणा देती है। जीवन में सत्य और धर्म का पालन सर्वोच्च है। आज के युग में नैतिक मूल्यों की गिरावट के बीच रामायण के आदर्श, जैसे सत्य, न्याय, और करुणा, अत्यन्त प्रासंगिक हैं। राम के जीवन से हमें आदर्श नेतृत्व के गुण मिलते हैं। वे एक आदर्श पुत्र, पति, राजा और मित्र थे। आज के राजनैतिक और सामाजिक नेतृत्व में इन गुणों की आवश्यकता है। स्त्री पात्रों में सीता का चरित्र आत्मसम्मान, धैर्य, और संघर्षशीलता का प्रतीक है। आधुनिक संदर्भों में महिला सशक्तिकरण की दिशा में यह चरित्र एक महत्त्वपूर्ण प्रेरणा स्रोत है। रामायण में पारिवारिक सम्बन्धों, मित्रता और समाज के प्रति दायित्वों को महत्त्वपूर्ण माना गया है। वर्तमान में टूटते पारिवारिक सम्बन्धों और व्यक्तिगत स्वार्थों के युग में रामायण के ये मूल्य समाज को जोड़े रखने में मददगार हो सकते हैं। रामायण में भारत के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच सहयोग और सद्भाव का उल्लेख मिलता है। यह आज की वैश्विक राजनीति और सांस्कृतिक विविधता में सामन्जस्य बनाये रखने का सन्देश देता है। अतः यह केवल एक धार्मिक ग्रन्थ नहीं, बल्कि मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को दिशा देने वाला एक दार्शनिक और नैतिक मार्गदर्शक है। इसका सन्देश आज के समाज में भी उतना ही प्रासंगिक और प्रेरणादायक है जितना कि प्राचीन समय में था।

वाल्मीकि जी द्वारा रामायण की रचना में भारतीय वनों का विवरण प्राप्त होता है, वैसा किसी अन्य ग्रँथ में प्राप्त नहीं होता. वर्तमान के वानिकी वैज्ञानिक भी रामायण में वनों के उल्लेख को पढ़कर हतप्रभ रहते हैं और कितने ही शोधकर्ताओं ने वाल्मीकि जी द्वारा रामायण में उल्लेखित वनों व वनस्पतियों पर ही शोध पत्र लिखे हैं.
एक शोध के अनुसार वाल्मीकि रामायण में 182 किस्म के पेड़-पौधों का वर्णन है, जो विश्व के किसी भी अन्य काव्य ग्रन्थों में नहीं प्राप्त होता! वाल्मीकि जी को भारत के विभिन्न क्षेत्रों के वनों का इतना गूढ़ ज्ञान था कि उनके बताये विवरण आज भी सटीक बैठते हैं.[10,11,12]

अग्नि परीक्षा के उपरान्त, राम का राज्याभिषेक हुआ, राम-सीता बहुत दिनों तक साथ रहे। सीता गर्भवती हुईं जिसे सुन कर राम प्रसन्न हुए।

कुबेर को रावण ने बंदी बना लिया था, युद्ध के बाद कुबेर को लँका से आज़ाद कराया गया। और कुबेर का ही पुष्पक विमान था, लेकिन वो राम की सवारी नहीं थी। कुबेर ने पुष्पक को आदेश दिया कि वह अब राम की सवारी बने, उसी आज्ञा को सुन कर पुष्पक राम जी के पास आया। तब राम और सीता पुष्पक विमान में बैठ कर एक बार फिर अशोकवाटिका में जाते हैं। अशोकवाटिका में राम सीता से पूछते हैं, की सीता की इच्छा क्या है, सीता कहती है, कि वह तपोवन देखना चाहती है, अगर वो किसी मुनि के आश्रम में एक दिन भी रहेगी तो उसे अच्छा लगेगा।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार, राम अपनी प्रजा का हाल चाल भरत और शत्रुघ्न से पूछते रहते हैं। राम को हर बात की खबर भरत देते रहते हैं। इसी पूछ ताछ के दौरान राम एक जासूस से कहते हैं सिर्फ अच्छी बातें मत बताओ अगर कुछ बुरी बातें भी है, तो वह भी बताओ। तब जासूस उन्हें इस अफवाह की बात बताता है।

उसी समय वो द्वारपाल को राम आज्ञा देते हैं कि भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न को तुरंत उनके कक्ष में भेज जाए। तीनो भाई कक्ष में आते हैं और राम उनसे इस अफवाह की बात कहते हैं, साथ ही लक्ष्मण से सीता को तपोवन दिखाने के बहाने से वन में छोड़ आने को कहते हैं। ये भी कहते हैं कि किसी भी प्रकार का कोई प्रश्न कोई नहीं पूछेगा, यह मेरी आज्ञा है और कल सुबह इसका पालन हो जाना चाहिए। लक्ष्मण सुबह सौमित्र से रथ तैयार करने को कहते हैं, और सीता जो अपनी इच्छा की पूर्ती होती देख बहुत खुश होती है, लक्ष्मण के साथ ख़ुशी-ख़ुशी चल पड़ती है, नदी पार करते वक्त लक्ष्मण

सीता को उनके वन में छोड़ कर आने की बात बताते हैं, साथ ही कहते हैं,'काश मुझे इस जाल में न फंसा जाता '[13,14,15]

वनवास में, राम, सीता और लक्ष्मण गोदावरी नदी के किनारे दक्षिण की ओर यात्रा करते हैं , जहाँ वे कुटियाएँ बनाते हैं और कृषि उत्पादों से अपना जीवन यापन करते हैं। एक दिन, पंचवती वन में रावण की बहन शूर्पणखा नाम की एक राक्षसी उनसे मिलने आती है । वह भाइयों को बहकाने का प्रयास करती है और असफल होने पर ईर्ष्यावश सीता को मारने की कोशिश करती है। लक्ष्मण उसकी नाक और कान काटकर उसे रोकते हैं। यह सुनकर, उसके भाई खर और दूषण राजकुमारों पर आक्रमण की योजना बनाते हैं। राम खर और उसकी राक्षसी को परास्त कर देते हैं । जब रावण को इन घटनाओं की खबर मिलती है, तो वह राक्षस मारीच की सहायता से सीता को बंदी बनाकर राम का नाश करने का संकल्प लेता है। मारीच सुनहरे हिरण का रूप धारण करके सीता का ध्यान अपनी ओर खींच लेता है। हिरण की सुंदरता से मोहित होकर सीता राम से उसे पकड़ने की विनती करती हैं। राम यह जानते हुए कि यह राक्षसों की चाल है, सीता को उनकी इच्छा से विचलित नहीं कर पाते और हिरण का पीछा करते हुए जंगल में चले जाते हैं, सीता को लक्ष्मण की निगरानी में छोड़ देते हैं।

कुछ समय बाद, सीता को राम की आवाज़ सुनाई देती है; अपने जीवन के लिए भयभीत होकर, वह लक्ष्मण से उनकी सहायता के लिए तुरंत आने का आग्रह करती हैं। लक्ष्मण उन्हें आश्वस्त करने का प्रयास करते हैं कि राम को इतनी आसानी से चोट नहीं पहुँचाई जा सकती और उनके लिए यही सर्वोत्तम होगा कि वे राम के आदेशों का पालन करते हुए उनकी रक्षा करते रहें। लगभग व्याकुल सीता कहती हैं कि उन्हें नहीं बल्कि राम को लक्ष्मण की सहायता की आवश्यकता है। लक्ष्मण उनकी इच्छा का पालन करते हैं, लेकिन शर्त रखते हैं कि वे कुटिया न छोड़ें और किसी अजनबी का स्वागत न करें। फिर वे एक रेखा खींचते हैं जिसे कोई राक्षस पार नहीं कर सकता और राम की सहायता के लिए चले जाते हैं। जब स्थिति सामान्य हो जाती है, तो रावण एक तपस्वी के वेश में प्रकट होता है और सीता से आतिथ्य सत्कार का अनुरोध करता है। अपने मेहमान की योजना से अनभिज्ञ सीता, धोखे में आ जाती है और रावण द्वारा जबरदस्ती ले जाई जाती है।[16,17,18]

जटायु नामक गिद्ध सीता को बचाने का प्रयास करता है, लेकिन वह बुरी तरह घायल हो जाता है। लंका में सीता को राक्षसों की निगरानी में रखा जाता है । रावण सीता से विवाह का प्रस्ताव रखता है, लेकिन राम के प्रति पूर्ण समर्पण के कारण सीता इनकार कर देती हैं। इसी बीच, राम और लक्ष्मण को जटायु से सीता के अपहरण की सूचना मिलती है और वे तुरंत उन्हें बचाने के लिए निकल पड़ते हैं। अपनी खोज के दौरान, उनकी मुलाकात कबन्ध और तपस्वी शबरी से होती है, जो उन्हें सुग्रीव और हनुमान के पास जाने का मार्ग बताते हैं।

लंका कांड के नाम से भी जाना जाने वाला यह ग्रंथ राम (वानर) और रावण (राक्षस) की सेना के बीच युद्ध का वर्णन करता है । सीता के विषय में हनुमान से सूचना प्राप्त करने के बाद, राम और लक्ष्मण अपने सहयोगियों के साथ दक्षिणी समुद्र तट की ओर अग्रसर होते हैं। वहाँ रावण का विधर्मी भाई विभीषण उनसे मिल जाता है । नल और नील नामक वानरों ने राम सेतु का निर्माण किया । [36]

राजकुमार और उनकी सेना लंका पार करते हैं। एक लंबा युद्ध छिड़ जाता है। एक युद्ध के दौरान, रावण के पुत्र मेघनाद ने लक्ष्मण पर एक शक्तिशाली अस्त्र फेंका, जिससे वे बुरी तरह घायल हो गए। तब हनुमान ने अपना विशाल रूप धारण किया और लंका से हिमालय की ओर उड़ान भरी। हिमालय पहुँचने पर, हनुमान लक्ष्मण को ठीक करने वाली संजीवनी बूटी नहीं मिली , इसलिए उन्होंने पूरे पर्वत को लंका वापस लाने का फैसला किया। अंततः, राम द्वारा रावण का वध करने पर युद्ध समाप्त हुआ। राम ने फिर विभीषण को लंका के सिंहासन पर बिठाया।

सीता से मिलने पर राम कहते हैं, "व्रण द्वारा उन्हें दी गई बदनामी और सीता के साथ किए गए अन्याय को हनुमान, सुग्रीव और विभीषण की सहायता से शत्रु पर विजय प्राप्त करने से मिटा दिया गया है।" [37] हालांकि, अपने राज्य के लोगों द्वारा सीता की पवित्रता पर की गई आलोचना से राम अत्यंत निराश हो जाते हैं। इसलिए सीता, नागरिकों को गलत साबित करने और अपने ऊपर लगे झूठे आरोप को मिटाने के लिए, राम और लक्ष्मण से अपने लिए चिता तैयार करने का अनुरोध करती हैं। जब लक्ष्मण चिता तैयार करते हैं, तो सीता अग्नि से प्रार्थना करती हैं और अपनी वैवाहिक निष्ठा को सिद्ध करने के लिए उसमें प्रवेश करती हैं। अग्नि स्वयं जलती हुई चिता से सीता को अपनी बाहों में लिए हुए प्रकट होते हैं और उनकी पवित्रता की गवाही देते हुए उन्हें राम को सौंप देते हैं। [38] राम बाद में खुशी-खुशी सीता को स्वीकार कर लेते हैं। वाल्मीकि और तुलसीदास द्वारा रचित रामायण के संस्करणों में अग्नि परीक्षा का प्रसंग भिन्न-भिन्न है। तुलसीदास के रामचरितमानस में सीता अग्नि की शरण में थीं (देखें माया सीता), इसलिए राम से पुनर्मिलन से पहले उन्हें अग्नि से मुक्त करना आवश्यक था। ब्रह्मा के नेतृत्व में देवता आते हैं और राम को परम भगवान नारायण का अवतार बताकर उनकी महिमा करते हैं। इंद्र मृत वानरों को पुनर्जीवित करते हैं।

वनवास के बाद, राम अयोध्या लौटते हैं और लोग इतने प्रसन्न होते हैं कि वे इसे एक त्योहार की तरह मनाते हैं। दीपावली वह दिन है जब राम, सीता, लक्ष्मण और हनुमान 14 वर्षों के वनवास के बाद अयोध्या पहुँचे थे, जब राम की अच्छाई की सेना ने राक्षस राजा रावण की बुराई की सेना को हराया था। राम के अयोध्या लौटने का जश्न उनके राज्याभिषेक के साथ मनाया जाता है। इसे राम पट्टाभिषेक कहा जाता है। रामायण में उल्लेख है कि राम ने सुग्रीव, जाम्बवान और अन्य वानरों को कई दान दिए और सीता को मोतियों की माला देते हुए कहा कि वे इसे किसी महान व्यक्ति को दें। सीता इसे हनुमान को देती हैं। राम विभीषण के प्रति बहुत कृतज्ञ हैं और उन्हें एक बड़ा उपहार देना चाहते हैं। राम ने अपने आराधना देवता (श्री रंगनाथस्वामी) को विभीषण को उपहार स्वरूप दिया। [39] [राम के शासन, राम राज्य को न्यायपूर्ण और निष्पक्ष बताया गया है। [40] कई लोगों का मानना है कि जब राम लौटे, तो लोगों ने दीये जलाकर अपनी खुशी मनाई , और दीपावली का त्योहार राम की वापसी से जुड़ा हुआ है।[17,18,19]

निष्कर्ष

रावण को हराने के बाद अयोध्या में उंच-नीच,छोटे -बड़े का भेदभाव किये बिना कुशल शासन की स्थापना ये सारी बातें धूमिल नहीं पड़तीं पर सीता के साथ उन्होंने जो व्यवहार किया, वह भी एक कटु सत्य है .अब यह अपना अपना नजरिया है कि सीता से दो बार अग्निपरीक्षा का आग्रह, गर्भवती सीता को जंगल में छोड़ आना कई लोगो को गौण लग सकता है क्यूंकि राम जी का यह व्यवहार उनके द्वारा किये गए दुसरे कार्यों के परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है.और वहीँ किसी के मन में यह भी ख्याल आता है कि सीता का भी एक अलग अस्तित्व था ,वे राम जी की पत्नी थीं पर कोई संपत्ति नहीं कि जब चाहा जैसा व्यवहार कर डाला.सीता जी भी सुख -चैन की ज़िन्दगी त्याग कर अपने पति के साथ जंगल जंगल विचरती रहीं, रावण के हाथो अपहृत हो, असीम मानसिक कष्ट झेला, उसके बाद वापस रानी बनने के बाद भी अपने बच्चों के साथ जंगल का कष्टमय जीवन बिताया .उनके चरित्र पर संदेह किया गया. उन्हें क्या सुख नसीब हुआ ? उन्हें भी सुखमय जीवन बिताने का अधिकार था , जिसे उनके पति द्वारा ही छीन लिया गया .[20]

संदर्भ

1. गोल्डमैन 1984 , पृ. 23.
2. यहां जाएं: बोस 2016 .
3. यहां जाएं: ब्रॉकिंगटन 1998 , पृ. 379ff .
4. "रामायण" 4 नवंबर 2015 को वेबैक मशीन पर संग्रहित । रैंडम हाउस वेबस्टर का अनब्रिज्ड डिक्शनरी ।
5. "रामायण | लेक्सिको द्वारा रामायण का अर्थ" । लेक्सिको शब्दकोश | अंग्रेज़ी । मूल से 19 फरवरी 2020 को संग्रहित । 19 फरवरी 2020 को पुनः प्राप्त ।
6. वाल्मीकि का रामायण ।

7. पिल्लई, पीजी (2023)। "पुराणों का धर्मनिरपेक्ष अध्ययन" । भक्ति आंदोलन: पुनर्जागरण या पुनरुत्थानवाद? टेलर एंड फ्रांसिस। पृष्ठ 107। ISBN 978-1-000-78039-0.
8. गोल्डमैन 1984 , पृ. 83,88.
9. भोजराजा (1924)। चंपू-रामायण (संस्कृत में)। पांडुरंग जवाली.
10. मुखर्जी, पी. (1981). उड़ीसा में मध्यकालीन वैष्णव धर्म का इतिहास । एशियन एजुकेशनल सर्विसेज। पृ. 74. ISBN 9788120602298मूल रूप से 1 फरवरी 2023 को संग्रहीत । 6 जनवरी 2017 को पुनः प्राप्त किया गया ।
11. सुखदेव (2002). रामायण के जीवंत विचार . जैको पब्लिशिंग हाउस. ISBN 97881799200226 जनवरी 2017 को प्राप्त किया गया ।
12. कृष्णमूर्ति, के.; मुखोपाध्याय, एस.; साहित्य अकादमी (1991)। विश्व में रामायण अध्ययन का एक आलोचनात्मक सर्वेक्षण: विदेशी भाषाएँ । साहित्य अकादमी, यूनियन एकेडेमिक इंटरनेशनेल, ब्रुसेल्स के सहयोग से। ISBN 97881720150776 जनवरी 2017 को प्राप्त किया गया ।
13. बुल्के, सी.; प्रसाद, डी. (2010)। रामकथा और अन्य निबंध । वाणी प्रकाशन. पी। 116. आईएसबीएन 97893500010736 जनवरी 2017 को प्राप्त किया गया ।
14. मोनिएर विलियम्स, अयन, 19 जून 2021 को वेबैक मशीन पर संग्रहीत , व्युत्पत्ति सहित संस्कृत अंग्रेजी शब्दकोश
15. मोनिएर विलियम्स, राम (8 मई 2021 को वेबैक मशीन पर संग्रहीत) , संस्कृत-अंग्रेजी शब्दकोश (व्युत्पत्ति सहित)
16. मोनिएर मोनिएर विलियम्स, 8 मई 2021 को वेबैक मशीन पर संग्रहीत , व्युत्पत्ति के साथ संस्कृत अंग्रेजी शब्दकोश
17. देबरॉय, बिबेक (25 अक्टूबर 2017)। वाल्मिकी रामायण खंड 1 . पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया। पी। xiv. आईएसबीएन 9789387326262मूल रूप से 3 अप्रैल 2023 को संग्रहीत । 21 मार्च 2023 को गूगल बुक्स के माध्यम से पुनः प्राप्त किया गया ।
18. गोल्डमैन 1984 , पृ. 88.
19. गोल्डमैन 1984 , पृ. 14–18.
20. राव 2014 , पृ. 2.